शिवपुरी

पति-पत्नी मिलकर खेल रहे थे सेक्स के लालच में फंसा कर रईसों को लूटने का खेल

शिकारी पति-पत्नी

"राजा और उसकी पत्नी सुधा लक्जरी लाईफ जीना चाहते थे। इसके जरूरी पैसों का इंतजाम करने राजा ने अपनी पत्नी सुधा की खूबसूरती को चारा बनाकर उसके हुश्न का ऐसा जाल बुना जिसमें एक-एक कर रईस आकर फंसते रहे। कहानी का शर्मनाक पहलू यह है कि चंद रुपयों के लालच में पत्नी अपनी पति के सामने ही दूसरे युवकों के संग

पति के सामने सोती थी गैर मर्द के साथ

जानकारी के अनुसार पैसों के लालच में कल्पना और उसके पति राजा ने अपनी गैरत को खूंटी पर टांग रखा था। युवकों को फंसाने के लिए उसका अश्लील वीडियो बनाने के लिए शोभा जिस समय युवक के साथ संबंध बना रही होती थी उस वक्त उसका पति राजा खिड़की से छुपकर गैर मर्द के साथ अपनी ही पत्नी का वीडियो बना रहा होता था। शोभा के अनुसार यह उसका धंधा है इसलिए इसमें शर्म कैसी।

शर्म से पेट नहीं भरता

थाने में पूछताछ के दौरान शोभा से पूछा गया, तुम्हें इस काम में शर्म नहीं आती? उसने बिना झिझके जवाब दिया, हमें तो पैसे चाहिए थे। शर्म से पेट नहीं भरता। इससे साफ है कि अपराध की जड़ें कितनी गहरी हैं। सूत्रों की माने तो शोभा ने यह भी कहा है कि जेल से बाहर आकर वह फिर यही काम करेगी।

शिवेन्द्र सिंह

चंद्रपाल धाकड

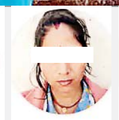

कल्पना रजक

राजा ओझा

पवन रावत

विकास रावत

य ह घटना सर्दियों की उस शाम से शुरू हुई, जब शिवपुरी जिले के बदरवास कस्बे में गल्ला मंडी बंद होने के बाद भी एक व्यापारी सुरेन्द्र की दुकान पर बल्ब जल रहा था। छब्बीस साल का सुरेन्द्र पिछले सात साल से अनाज का कारोबार कर रहा था। मंडी में उसकी पहचान एक ईमानदार और मेहनती व्यापारी के रूप में थी। पर वह अकेला था। शादी की बातें चल रही थीं, पर हर बार कोई न कोई कमी निकल जाती। इस अकेलेपन ने उसे फोन की घंटी के प्रति थोड़ा और संवेदनशील बना दिया था।

छब्बीस जनवरी पर गणतंत्र दिवस की छुट्टी होने के कारण दुकान बंद थी। सुरेन्द्र (बदला नाम) घर पर आराम कर रहा था, तभी मोबाइल की घंटी बजी। स्क्रीन पर अनजान नंबर था। उसने सोचा शायद कोई ग्राहक हो, या फिर होम डिलीवरी वाला। फोन उठाया तो दूसरी तरफ से एक युवती की आवाज आई।

क्या आप सुरेन्द्र जी बोल रहे हैं?

जी, आप कौन?

मैं अंजलि हूं। मैं आपके पड़ोस में ही रहती हूं। एक काम के सिलसिले में बात करनी थी।

यह शुरुआत थी एक ऐसे जाल की, जिसकी शोभा सुरेन्द्र ने कभी नहीं की थी। अंजलि नाम की इस युवती की आवाज में एक अजीब सा आकर्षण था। वह न तो बहुत जल्दी अपनी बात रखती, न ही बहुत देर तक बात करती। बस इतना कहकर रख देती कि फिर कभी बात करेंगे। यह अधूरी बातें सुरेन्द्र के मन में उत्सुकता पैदा करतीं। धीरे-धीरे बातचीत बढ़ी। अंजलि ने बताया कि वह एक निजी कंपनी में काम करती है, परिवार में कोई नहीं है, अकेली रहती है। उसकी जिंदगी में सुकून नहीं है। वह बस किसी को अपना दुखड़ा सुनाना चाहती थी।

सुरेन्द्र को लगा यह कोई मासूम लड़की है, जिसे एक दोस्त की जरूरत है। उसने सोचा क्या हर्ज है, बातें तो मुफ्त में होती हैं। तीन दिन बीते। अंजलि ने अब अपनी बातों में थोड़ी नजदीकी लानी शुरू कर दी। वह पूछती कि आपने खाना खाया या नहीं, कब तक दुकान पर रहते हो, घर पर अकेले कैसे रहते हो। ये सवाल सुरेन्द्र को अच्छे लगते। उसे लगता कि कोई तो है जो उसकी परवाह करता है।

इधर बदरवास से थोड़ी दूर ऐनवारा गांव में चंद्रपाल सिंह धाकड़ नाम का शातिर युवक अपनी टीम के साथ बैठा था। चालीस साल का चंद्रपाल पहले भी कई छोटे-मोटे मामलों में पुलिस के संपर्क में आ चुका था। पर इस बार उसने कुछ बड़ा प्लान बनाया था। उसे पता था कि बदरवास में सुरेन्द्र की अच्छी खासी दुकान है, उसके पास पैसा है, और वह अकेला रहता है। शिकार के लिए इससे बेहतर निशाना कोई और नहीं हो सकता था।

चंद्रपाल ने माधव नगर निवासी राजा ओझा से संपर्क किया। राजा उम्र में छोटा था, पर हरामखोरी के मामले में उस्ताद। राजा की पत्नी शोभा (बदला नाम) उसके गिरोह का सबसे घातक हथियार थी। तेईस साल की शोभा के चेहरे पर एक अजीब सी मासूमियत थी, जो किसी को भी धोखा दे सकती थी। चंद्रपाल ने शोभा को पूरी स्क्रिप्ट समझाई।

तुम बस दोस्ती करो। प्यार का नाटक करो। शिकार को यकीन दिलाओ कि तुम उसके बिना नहीं रह सकती। बाकी सब हम देख लेंगे। शोभा ने यह काम बखूबी किया। उसने सुरेन्द्र से रोज बात करना शुरू कर दिया। सुबह उठते ही गुड मॉर्निंग का संदेश, रात में सोने से पहले मीठी-मीठी बातें। सुरेन्द्र को लगने लगा कि यह कोई सपना है, जो सच हो रहा है। उसने कभी शोभा को देखा नहीं था, पर उसकी आवाज उसके दिल में उतर चुकी थी।

तीस जनवरी की रात शोभा ने सुरेन्द्र से कहा, मैं तुमसे मिलना चाहती हूं। बहुत दिनों से सोच रही हूं, पर कह नहीं पा रही थी।

सुरेन्द्र का दिल जोर से धड़का। उसने कभी किसी लड़की से इस तरह की बात नहीं की थी। उसने पूछा,कहां मिलना है?

बड़ौदी वाली पानी की टंकी के पास। कल दोपहर तीन बजे। अकेले आना।

इकतीस जनवरी। सुरेन्द्र ने अपने चालक से कहा कि कार निकालो। कहीं बाहर जाना है। दोपहर ढाई बजे वे घर से निकले। सुरेन्द्र ने नए कुर्ते पहने था, बाल ठीक किए थे। बड़ौदी टंकी पर भीड़ कम थी। सर्दी थी, लोग घरों में दुबके थे। तीन बजते-बजते एक लड़की वहां आई। नीली साड़ी पहने, हाथ में मोबाइल लिए। उसने चारों ओर देखा और सीधे कार की ओर बढ़ी। सुरेन्द्र ने दरवाजा खोला। शोभा कार में बैठ गई।

चलो कहीं घूमते हैं, उसने कहा।

सुरेन्द्र ने ड्राइवर से कहा, बड़ागांव रोड की ओर चलो। कार चल पड़ी। रास्ते में शोभा ने सुरेन्द्र का हाथ थाम लिया। उसने कहा, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। तुम मुझसे शादी करोगे?

सुरेन्द्र चुप रहा। वह सोच रहा था कि यह सब इतनी जल्दी कैसे हो गया। पर उसकी चुप्पी शोभा ने सहमति समझ ली।

कार जैसे ही बड़ागांव के पास पहुंची, चार युवक सड़क किनारे खड़े दिखे। शोभा ने अचानक फोन निकाला और किसी से बात करने लगी। अगले ही पल वे चारों युवक कार की ओर बढ़े। उन्होंने कार रुकवाई और अंदर झांका।

यह कौन है तेरे साथ? एक युवक ने शोभा से पूछा।

यह तो... मेरा दोस्त है, शोभा ने डर का अभिनय किया।

दोस्त? हमें पता है तू क्या कर रही है। बाहर निकल सब!

विनोद ने बीच बचाव की कोशिश की, पर एक युवक ने उसे धक्का देकर अलग कर दिया। सुरेन्द्र को जबरन कार से बाहर निकाला गया। इसे बांकड़े मंदिर ले चलो, उनमें से एक युवक ने कहा। जिससे कार फिर चल पड़ी, इस बार सुरेन्द्र के साथ वे चारों युवक भी सवार थे। शोभा अब बदल चुकी थी। उसकी आवाज में वह मिठास नहीं थी, बल्कि एक ठंडी बेरुखी थी। वह मुस्कुरा रही थी, मानो कोई खेल जीत लिया हो।

बांकड़े हनुमान मंदिर के पास सुनसान जंगल था। वहां कार रोकी गई। एक युवक ने मोबाइल निकाला और वीडियो बनाने लगा। उसने सुरेन्द्र से कहा, अब बोल, तूने इस लड़की के साथ क्या किया?

सुरेन्द्र ने कहा, मैंने कुछ नहीं किया। यह तो...

यह ऐसे नहीं मानेगा। शोभा दिखाओ तो जरा इसे अपना हुश्न एक युवक ने शोभा से कहा तो पल भर में शोभा ने अपने सारे कपड़े उतारने के बाद सुरेन्द्र को भी निर्वस्त्र कर दिया। जिसके बाद वह सुरेन्द्र को साथ लेकर जबरन जमीन पर लेट कर ऐसे नाटक करने लगी मानों सुरेन्द्र उसके साथ संबंध बना रहा हो। लगभग 10 मिनिट तक यह नाटक चलता रहा इसके बाद एक युवक सुरेन्द्र से बोला अब हमारे पास सबूत है। तेरा वीडियो बना लिया है। अब दो रास्ते हैं। या तो हम यह वीडियो सोशल मीडिया पर डाल दें, तेरे घर भेज दें, मंडी में सबको दिखा दें। या फिर तू हमारी बात मान ले।

शेष पृष्ठ 7 पर...

दैनिक जागरण www.dainikjagranmpcg.com भोपाल, 21 फरवरी 2026

सत्यकथा

देवरी (सागर): पुरानी प्रेमिका को हासिल करने के लिए आशिक ने किया था प्रेमिका के पति का कत्ल

"रजनी के साथ शोएब का याराना पुराना था। शादी से पहले एक दूसरे की नजदीकी हासिल कर चुके थे। शोएब और रजनी आपस में शादी करना चाहते थे लेकिन ऐसा हो न सका। खुद रजनी भी आशिक को भूल नहीं पा रही थी न ही भूलना चाहती थी इसलिए अच्छे काम का लालच देकर रजनी अपने पति को लेकर बचपन के शहर में वापस लौटी ही नहीं बल्कि फिर अपनी जिंदगी का एक हिस्सा प्रेमी शोएब के नाम कर दिया।

दे वरी मध्य प्रदेश में सागर जिले का वह छोटा-सा कस्बा, जहां गर्मियों में धूल उड़ती है और बरसात में कीचड़ फैल जाता है। यहां की सड़कों पर दिन ढलते ही सन्नाटा पसर जाता है। लक्ष्मी नगर बहेरिया की तंग गलियों में उस शाम कोई खास हलचल नहीं थी। प्रिंस वाल्मीकि, ब। ई स साल का एक युवक, जिसने अभी-अभी शादी के कुछ महीने ही गुजारे थे, उस शाम सात बजे घर से निकला। घर से निकलकर उसने हमेशा की तरह दरवाजे पर खड़ी अपनी पत्नी रजनी की तरफ देखा, लेकिन उस रोज दोनों को ही इस बात का इल्म नहीं था कि वो एक दूसरे का आखिरी बार देख रहे हैं।

दो दिन बीते गए उस रोज शाम को घर से निकला पति वापस नहीं आया तो तीसरे दिन रजनी ने थाने जाकर पति की गुमशुदगी दर्ज करवा दी।

पुलिस ने प्रिंस की तलाश शुरू की लेकिन किसी को नहीं पता था कि जिस आदमी को वे ढूंढ रहे हैं, वह उसी वक्त दो किलोमीटर दूर एक सेप्टिक टैंक में दफन था।

लेकिन यह कहानी सिर्फ प्रिंस की मौत की नहीं है। यह कहानी है उस आदमी की भी है, जिसने यह हत्या की। यह कहानी है उस औरत की भी है, जो बिना जाने अपने की पति के हत्यारे के साथ महीनों रही। और यह कहानी है उस शातिर दिमाग की भी है, जिसने एक मैसेज से खुद ही अपने पांव में कुल्हाड़ी मार ली।

प्रिंस वाल्मीकि सागर का रहने वाला, बाईस साल का युवक। जिसने प्यार किया, शादी की, और सोचा कि जिंदगी बस शुरू हुई है। वह मेहनतकश था। इसी बीच पत्नी ने उससे सागर छोड़कर देवरी चलकर रहने को कहा तो वह ससुराल में आकर रहने लगा। प्रिंस को लगता था कि पत्नी उसकी है, उसके सपने उसके हैं। उसे नहीं पता था कि उसी घर में, उसी गली में, एक और आदमी उसकी पत्नी की तस्वीरों को सहेजकर रखता है। रजनी, प्रिंस की पत्नी। बीस साल की। सोशल मीडिया पर मिली दोस्ती, फिर प्यार, फिर शादी। लेकिन शादी से पहले भी, शादी के बाद भी, उसके मन में एक और नाम बसा था। शोएब। वह उसे भूल नहीं पाई थी। या शायद भूलना चाहती ही नहीं थी।

शेष पृष्ठ 4 पर...

पीठ पीछे

उत्तरप्रदेश

मामी से इश्क में भांजे ने ली मामा की जान

मामी जान

सीसीटीवी से हुई पहचान

आरोपियों ने मृतक को जंगल के अंदर गोली मारी थी लेकिन गोलियों की आवाज सुनकर किसानों ने इसकी जानकारी पुलिस को दे दी थी। किसानों ने तीन लोगों को मोटर साइकल पर आते और दो को वापस जाते देखा था। इसलिए पुलिस ने रास्ते में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाला जिससे मोटर साइकल पर बैठे असलम की पहचान हो गई थी।

आरोपी पत्नी

सऊदी अरब कमाने गए शौहर की गैर मौजूदगी में जवानी की मांग से मजबूर बेगम ने पड़ोस में रहने वाले भांजे को अपनी वासना का साधन बना लिया था। लेकिन किसी दिल जले द्वारा बेगम की अय्याशी की खबर पाकर शौहर परदेश ने वापस लौट तो आया लेकिन बेगम ने अपने आशिक की मदद से उसे ठिकाने लगवा दिया।

शौहर को छोड़कर भांजे के साथ रहना चाहती थी मामी

शाम का अंधेरा घिरने पर बिजनौर जिले के किरतपुर थाने की सीमा से लगे जंगल के किनारे खेतों में काम कर रहे किसान घर वापसी की तैयारी कर ही रहे थे कि अचानक जंगल से एक-एक कर तीन गोलियों की आवाज ने सबको चौंका दिया।

लोग इसकी चर्चा कर ही रहे थे कि थोड़ी देर बाद जंगल से दो युवक निकलकर अपनी मोटर साइकल से बिजनौर की तरफ भाग गए। कोई घंटा भर पहले यही दोनों युवक जंगल की तरफ गए थे लेकिन तब उनके साथ एक आदमी और था। यानी गए तीन थे और लौटे दो। तो क्या गोली उस तीसरे युवक को मारी गई है जो इनके साथ था। मामला संदिग्ध देख किसानों ने गोली चलने की जानकारी किरतपुर पुलिस को दे दी। जिससे पुलिस जंगल में पहुंची तो एक युवक का शव मिल गया जिसे दो गोलियां मारने के अलावा उसका चेहरा भी पत्थर से कुचल दिया गया था।

दूसरे दिन शव की पहचान बिजनौर से बीस किलोमीटर दूर रहने वाले असलम के रूप में होने पर जब पुलिस उसके घर पहुंची तो मालूम चला कि असलम को कल शाम पड़ोस में रहने वाला उसका भांजा शरीफ और शरीफ का दोस्त अब्दुल अपने साथ मोटर साइकल पर लेकर गए थे तभी से वो वापस नहीं आया।

पुलिस ने शरीफ और अब्दुल की घेरा बंदी की तो दोनों ने पुलिस के ऊपर गोली चला दी जिससे पुलिस ने भी गोली चलाई जो शरीफ के पैर में लगी। जिसके बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर उनके पास से देशी तमंचा और मोटर साइकल बरामद कर ली। पूछताछ में मृतक असलम की पत्नी शबनम का नाम सामने आने पर पुलिस ने शबनम को भी गिरफ्तार कर लिया। जिसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

शबनम और असलम की शादी 7 साल पहले हुई थी। उनके दो बच्चे भी हैं। शादी के बाद असलम पैसा कमाने सऊदी अरब चला गया तो यहां शबनम अकेली रह गई। शबनम के पड़ोस में ही असलम का भांजा शरीफ रहता था। जो मामा की गैर मौजूदगी में मामी के काम में उनकी मदद करता रहता था।

शरीफ

शादीशुदा था मगर उसकी बीवी लड़ झगड़ कर मायके में जाकर रहने लगी थी। इसलिए एक तरफ जहां 25 साल की शबनम शौहर की गैरमौजूदगी में शारीरिक सुख के लिए तरस रही थी वहीं शरीफ भी पत्नी के न रहने से अपनी वासना से परेशान था। इसी बीच कोई पांच साल पहले एक रोज शरीफ शबनम के घर गया तो उस समय शबनम कपड़े बदल रही थी। उसने मामी को इस रूप में देखा तो उसका दूर उबलने लगा। उस रोज से शरीफ की नजर शबनम के प्रति बदल गई। वह धीरे-धीरे उसके नजदीक आने की कोशिश करने लगा। शरीफ की बदली निगाहों को शबनम पढ़ चुकी थी। वह खुद भी पुरूष संग के लिए तरस रही थी इसलिए शरीफ का मन देखते हुए उसने भी अपनी तरफ से लगाम ढीली छोड़ दी।

मामी का इशारा शरीफ समझ चुका था इसलिए एक रोज दोपहर में जब मामी के दोनों बच्चे बाहर गली में खेल रहे थे शरीफ मामी के पीछे पीछे अंदर के कमरे में गया तो सीधे मामी के पास जा पहुंचा।

अरे आओ शरीफ मैं तुम्हें ही याद कर रही थी। बड़ी उम्र है तुम्हारी।

अरे मामी काहे को बड़ी उम्र मी दुआ दे रही हो। यही तो कट नहीं रही।

क्यों नहीं कट रही।

बिना बेगम के जीना भी कोई जीना है।

कह तो तुम सच रहे हो। मगर मैं भी तो अकेले काट रही हूं।

आप तो कमाल करती है। इस उम्र में मामा साल में एक दो महीने का आते हैं। कैसे काटती है आप अपनी तनहाई?

अंदर आओ बताती हूं। शबनम ने उसे अंदर के कमरे में आने का इशारा करते हुए कहा। आज्ञाकारी लड़के की तरह शरीफ मामी के पीछे पीछे अंदर के कमरे में गया तो शबनम उससे लिपटते हुए बोली वक्त खराब मत करो बच्चे किसी भी समय वापस आ सकते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर...

तमंचा खरीदने बेगम ने दी अंगूठी

शरीफ ने बताया कि मामू की हत्या करने के लिए हथियार खरीदने उसके पास पैसे नहीं थे। इसलिए मामी ने अपनी सोने की अंगूठी उसे दी थी जिसे बेचकर उसने तमंचा खरीदा था। शरीफ ने यह भी बताया कि पहली गोली उसने चलाई थी मगर वह निशाने पर नहीं लगी जिसके बाद अब्दुल से दो गोलियां मामू की पीठ में मारी थी। लाश पहचान में न आए इसलिए उन्होंने पत्थर से उसका चेहरा कुचल दिया था।

जांच में सामने आया है कि शबनम पति को छोड़कर भांजे के साथ रहने की जिद कर रही थी। इस बात पर शौहर आए दिन उसके साथ मारपीट करता था। इसलिए शबनम ने शौहर को ही रास्ते से हटाने का फैसला कर लिया था।

...पृष्ठ 2 का शेष

शरीफ भी पीछे नहीं हटा उसने तुरंत ही मामी को बेपर्दा कर डाला और दोनों पाप के समंदर में उतर गए। शरीफ रिश्ते में शबनम का भांजा लगता था इसलिए उसका पहले से ही शबनम के घर में आना जाना था इसलिए शारीरिक संबंध बना जाने के बाद शरीफ और शबनम आए दिन एकांत में मिलने का मौका तलाशने लगे। जिसका असर यह हुआ कि वे एक दूसरे के दीवाने हो गए। लेकिन ऐसी बातें छुपती नहीं है इसलिए दोनों का इश्क चर्चा में रहने लगा। असलम को भनक लगी तो उसने शबनम को बच्चों को लेकर सऊदी आने के लिए कहा। लेकिन उसने शौहर को सऊदी आने से मना कर दिया। इसलिए दो महीने बाद असलम भारत आकर ड्राइवर की नौकरी करने लगा। यह देखकर शरीफ और शबनम दोनों परेशान हो गए। लेकिन इस बीच असलम जब गाड़ी लेकर बाहर जाता तो शबनम अपने आशिक को रात के अंधेरे में घर बुलाने लगी। लेकिन एक रात असलम के बेटे ने शरीफ को रात में अपनी अम्मी के साथ सोता देखकर इसकी जानकारी पिता को दे दी। जिससे असलम ने पत्नी की बुरी तरह पिटाई कर दी और शरीफ को अपने घर आने से साफ मना कर दिया। इससे शबनम घर से बाहर जाकर शरीफ से मिलने लगी। इसकी जानकारी लगने पर असलम ने शबनम के घर से बाहर जाने पर रोक लगा दी। इससे शबनम विद्रोही हो गई वह शरीफ के संग रहने की बात करने लगी। जिससे आए दिन असलम उसकी पिटाई करने लगा। इसी बीच एक रोज मौका निकालकर शबनम अपने आशिक से मिली और उसने असलम को हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का कहते हुए तमंचा खरीदने के लिए प्रेमी का अपनी सोने की अंगूठी दे दी। शरीफ ने अंगूठी बेचकर तमंचा खरीदकर अपने दोस्त अब्दुल को संग देने के लिए राजी कर लिया। जिसके बाद 28 अप्रैल को दोनों पार्टी के लिए असलम को जंगल में ले गए जहां शराब पिलाने के बाद उन्होंने उसकी पीठ में दो गोलियां मारकर उसकी हत्या करने के बाद मौके से ही शबनम को फोन लगाकर काम हो जाने की खबर दी और फिर अपने घर वापस आ गए। लेकिन पुलिस ने अगले की दिन सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

...पृष्ठ 3 का शेष

विजय की समाज में दामाद पहली बार घर आए और दारू-मुर्गा की पार्टी न हो ऐसा कैसे हो सकता है। इसलिए रात में दामाद ने अपने होने वाले ससुर के साथ छककर शराब पी और फिर पीछे की तरफ दहलान में लगे बिस्तर पर सोने चला गया। ससुराल वालों ने उसे बाहर सोने के बजाए अंदर सोने को कहा लेकिन उसने खुले में अच्छी नींद आने की बात कहकर मना कर दिया। दरअसल उसका मकसद सबके सो जाने के बाद गुलाब को पीछे दहलान में बुलाने का था। पार्टी के बाद ससुराल के लोग गहरी नींद में सो गए। लेकिन विजय और गुलाब दोनों की आंखों में नींद नहीं थी। इसलिए जब आधी रात बीत गई तो विजय ने गुलाब के फोन पर घंटी की। घंटी बजते ही गुलाब ने फोन काट दिया और कुछ देर तक शांत पड़ी रहने के बाद चुपचाप उठकर पीछे दहलान में आ गई। विजय ने गुलाब को देखा तो लपककर उसे सीने से लगा लिया और बेतहाशा प्यार करने लगा। किशोर उम्र गुलाब ने पहली बार अपने शरीर के नाजुक अंगों पर पुरुष के स्पर्श को महसूस किया तो विजय के साथ वह भी वासना की आग में जलने लगी। इसका फायदा उठाकर विजय ने गुलाब को पहली मुलाकात पति-पत्नी के रिश्ते के सारे पाठ पढ़ा दिए। इस घटना के बाद जब गुलाब के खून में वासना का ज्वार उतरा तो वह फूट-फूट कर रोने लगी। दरअसल उसने कभी नहीं सोचा था कि वह शादी से पहले किसी पुरुष से संबंध बनाएगी भले की वह उसका होने वाला पति ही क्यों न हो। गुलाब को रोता देखकर विजय ने उसे समझाया और शोर से घर वालों के जाग जाने का डर दिखाया जिससे गुलाब चुपचाप जाकर अंदर अपने बिस्तर पर सो गई। विजय पहले दूसरे दिन अपने गांव वापस जाने की बात कह रहा था लेकिन रात में जो कुछ हुआ था उससे विजय को भरोसा था कि आज की रात भी गुलाब उसके पास आए बिना नही रह पाएगी। इसलिए सास के रोकने पर वह थोड़ी सी न नुकर कर एक दिन के लिए और रूक गया। गुलाब जानती थी कि विजय के रुकने का मकसद क्या है उसे विजय पर गुस्सा तो आ रहा था लेकिन उसने यह सोचकर अपने मन को समझा लिया था कि आखिर आज नहीं तो कल उसके जिस्म पर विजय का ही तो अधिकार होने वाला है। लेकिन उसने मन ही मन ठान लिया था कि वह आज रात में विजय के पास नहीं जाएगी। दूसरे दिन शाम को ससुराल की पड़ोस में रहने वाले कुछ युवकों के साथ विजय घूमने चला गया। परिवार के लोग दामाद के लिए खाना पीना तैयार करने में लगे थे संयोग से इसी बीच गुलाब ने देखा कि

विजय धोखे से अपना मोबाइल घर पर ही छोड़ गया है। यह देखकर उसने विजय का मोबाइल उठा लिया दरअसल वह देखना चाहती थी कि विजय के पास इतने गंदे वीडियो कहां से आते हैं। गुलाब ने मोबाइल की गैलरी खोलकर देखा तो उसमें दर्जनों गंदे वीडियो थे जिनमें से कुछ तो विजय उसे पहले ही भेज चुका था। इसी बीच अचानक एक वीडियो में गुलाब को विजय की शक्ल दिखी तो उसने उत्सुकता के चलते वह वीडियो प्ले किया तो गुलाब के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। वीडियो में विजय किसी दूसरी लड़की के साथ वही सब कर रहा जो पिछली रात उसने गुलाब के साथ किया था। विजय को दूसरी लड़की के साथ गंदा काम करते देख गुलाब को खून गुस्से से उबल पड़ा। उसे इस बात से मतलब नहीं था कि विजय दूसरी लड़की के साथ है उसे गुस्सा तो इस बात का था कि विजय ऐसे काम का आदि है इसलिए उसने गुलाब को होने वाले पति के नाम पर इमोशनल ब्लैकमेल कर अपने सुख के लिए संबंध बनाए थे। यह सब सोचकर गुलाब के मन में विजय के प्रति नफरत का ज्वालामुखी फूट पड़ा जिसके बाद उसने मन ही मन फैसला कर लिया और रात होने का इंतजार करने लगी। दूसरे दिन रात में विजय के मोबाइल से घंटी आने से पहले की गुलाब पीछे दहलान में जा पहुंची। गुलाब को देखते ही विजय खुश हो गया उसे लगा कि वह कल वाली मस्ती एक बार फिर लूटने के लिए खुद चलकर आई है। इसलिए उसने गुलाब को बिस्तर पर गिराकर उसके कपड़े हटाने की कोशिश करने लगा लेकिन गुलाब ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा पहले तुम्हारा मोबाइल निकालो। विजय ने उसे मोबाइल दे दिया तो उसने वही वीडियो दिखाते हुए उससे पूछा यह क्या है? विजय का चेहरा उतर गया। उसने कहा अरे कुछ नहीं यह दो मेरी दोस्त है एक रोज उसने जबरदस्ती मेरे साथ यह किया था। अच्छा जबरदस्ती और इस जबरदस्ती में तुम हंसते हुए अपना वीडियो बनाते रहे। अरे यार इसे भूल जाओ लाओ में डिलीट कर देता हूं तुम की मेरी पत्नी हो आज के बाद किसी की तरफ देखूंगा भी नहीं। विजय ने ऐसा कहकर उसके हाथ से मोबाइल छीनने की कोशिश की। मगर गुलाब ने उसका मोबाइल अपने कब्जे में लेते हुए कहा कोशिश न करो। अब यह सब मैं अपने और तुम्हारे पिता को दिखाऊंगी। मुझे ऐसे आदमी से शादी नहीं करना जो दूसरी औरतों के साथ सोता हो। गुलाब की बात सुनकर विजय डर गया। उसने मोबाइल छीनने की एक बार फिर कोशिश करते हुए अपनी सफाई देने का प्रयास किया। लेकिन गुलाब को उसका जवाब पसंद नहीं आया। उसके दिमाग में शक के कीड़े रेंगने लगे। तू औरतों के साथ अपनी नंगी तस्वीरें अपने फोन में क्यों रखता है? उसकी आवाज में गुस्सा और जलन साफ झलक रही थी। विजय ने समझाने की कोशिश की, पागल मत हो। ये बस एक गलती फोटो है। तू ही तो है मेरी होने वाली पत्नी। लेकिन गुलाब को ये बातें समझ नहीं आ रही थीं। उसके मन में अब केवल एक ही सवाल था के क्या विजय ने भी उसके साथ पत्नी न समझकर एक लड़की मानते हुए बुरा काम किया है। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद दोनों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई। गुलाब ने विजय पर आरोप लगाने शुरू कर दिए। तू मुझे धोखा दे रहा है। तेरे मन में कोई और है। फिर मुझसे शादी क्यों कर रहा है? आवेश में वह चिल्लाने लगी। उसकी आंखें लाल हो गई थीं, चेहरा गुस्से से तमतमा उठा था। वह विजय पर झपटी। विजय हैरान था, उसने कभी अपनी मासूम मंगेतर को इस रूप में नहीं देखा था। इसी बीच गुस्से में भरी गुलाब की नजर पास ही पड़े एक बिजली के तार पर पड़ी। वह तार उठाकर विजय पर टूट पड़ी और तार उसके गले में कस दिया। विजय ने छुड़ाने की कोशिश की, वह हांफने लगा, उसकी आंखें बाहर निकल आईं। लेकिन गुलाब की पकड़ मजबूत थी, उसका गुस्सा उससे भी मजबूत। उसने तार को और जोर से खींचा। कुछ ही पलों में विजय की हाथ-पैर की हरकतें थम गईं। उसका शरीर ढीला पड़ गया। कुछ देर बाद गुलाब को एहसास हुआ कि उसने क्या कर दिया है। गुस्से की आग ठंडी पड़ी और उसकी जगह डर ने ले ली। वह कांपने लगी। उसने विजय का शव वहीं छोड़ दिया और इधर-उधर देखने लगी। किसी ने देखा तो नहीं? अंधेरा था, कोई नहीं था। अब उसके सामने सबसे बड़ी समस्या थी शव को कहां छुपाए? उसने फैसला किया कि वह शव को घर से दूर कहीं फेंक देगी, जहां किसी को पता न चले। बड़ी मुश्किल से, डरते-कांपते, उसने विजय की लाश को घसीटा और गांव से थोड़ी दूर एक सुनसान जगह पर फेंक दिया। वहां झाड़ियां थीं, कोई आता-जाता नहीं था।

अगले दिन सुबह का सूरज तब किसी राहगीर की नजर झाड़ियों के पास पड़े एक शव पर पड़ी। उसने देखा तो उसके होश उड़ गए। वहां एक युवक का शव पड़ा था, जिसके गले पर गहरे नीले-काले निशान थे। शरीर अकड़ चुका था। चीख-पुकार मच गई। गांव वाले इकट्ठा हो गए। किसी ने पुलिस को सूचना दी। कुछ ही देर में रीठी थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरा और पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। मृतक की पहचान विजय के रूप में हुई। पुलिस ने देखा कि गले पर बिजली के तार से गला घोंटे जाने के साफ निशान थे। शरीर पर संघर्ष के भी निशान थे। यह साफ था कि यह हत्या है। लेकिन किसने की? पुलिस ने जांच शुरू की। सबसे पहले उन्होंने मृतक के परिवार वालों से बात की। उन्होंने बताया कि विजय अपनी मंगेतर से मिलने गांव आया था। पुलिस की नजर अब गुलाब और उसके परिवार पर पड़ी। जब पुलिस गुलाब के घर पहुंची, तो उसका व्यवहार काफी अजीब था। वह घबराई हुई लग रही थी। पुलिस ने उससे पूछताछ शुरू की। शुरू में उसने कहा कि विजय उससे मिलने आया था, थोड़ी देर बात हुई, फिर वह चला गया। उसे नहीं पता कि आगे क्या हुआ। लेकिन पुलिस को उसके बयान में कई विरोधाभास नजर आए। वह एक ही बात को बार-बार बदल रही थी। जब उससे पूछा गया कि विजय कितने बजे गया, तो वह सटीक जवाब नहीं दे पाई। पुलिस ने उसके कपड़ों पर खून के छींटों को भी देखा, जिसे उसने छुपाने की कोशिश की। पुलिस को शक हो गया कि यह लड़की कुछ छुपा रही है। पुलिस की सख्ती के आगे गुलाब टूट गई। वह फूट-फूट कर रोने लगी और फिर उसने पूरी कहानी बयान कर दी। उसने बताया कि कैसे उसने विजय के मोबाइल में दूसरी लड़की की तस्वीर देखी, कैसे उसे गुस्सा आया, कैसे बहस हुई और फिर आवेश में आकर उसने बिजली के तार से उसका गला घोंट दिया। उसने बताया कि कैसे उसने डर के मारे शव को झाड़ियों में फेंक दिया। उसके बयान ने पुलिस को भी चौंका दिया। एक नाबालिग लड़की, जिसकी अभी उम्र भी नहीं थी, उसने इतनी सहजता से हत्या कर दी और सबूत मिटाने की कोशिश की।

पुलिस ने गुलाब को हिरासत में ले लिया। चूंकि वह नाबालिग है, इसलिए उसे किशोर न्यायालय में पेश किया गया। एडिशनल एसपी संतोष डेहरिया ने बताया कि आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है और उसे किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किया गया है। अब आगे की कार्रवाई किशोर न्याय अधिनियम के तहत होगी।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

वारासिवनी (बालाघाट) | प्रेम त्रिकोण में हुई थी आईटीआई स्टूडेंट की हत्या

प्यार के राही

सपना द्वारा इग्नोर किए जाने से वीरेन्द को शक था कि प्रेमिका की बदली निगाहों का कारण प्रेमिका के भाई का दोस्त सुरेश है। वीरेन्द को इस बात का भी शक था कि सपना अब सुरेश को प्यार करने लगी है इसलिए एक रोज

तीन दिन तक लगातार बेटे ने फोन रिसीव नहीं किया तो नागपुर में रहने वाले गंगाराम सीधे बस पकड़कर वारासिवनी जा पहुंचे।

मृतक

गंगाराम का इकलौता बेटा सुरेश यहां आईटीआई की पढ़ाई करडुने आया था। सुरेश यहां किराये का मकान लेकर रहता था इसलिए जब गंगाराम, सुरेश के कमरे पर पहुंचे तो मकान मालिक से मिली जानकारी को सुनकर उनके पैरों तले से जमीन सरक गई। मकान मालिक ने उन्हें बताया सुरेश तो 29 सितंबर से ही रुम पर नहीं लौटा। मकान मालिक यह सोचकर बेफ्रिक थे कि संभवतः सुरेश अपने घर नागपुर चला गया होगा। बेटा तीन दिन से लापता है यह सुनकर गंगाराम सीधे वारासिवनी थाने जा पहुंचे और बेटे की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवा दी।

सुरेश कोई नादान बच्चा नहीं था इसलिए पुलिस का मानना था कि संभव है कि वो खुद किसी बात को लेकर कहीं चला गया होगा और हफ्ते-दस दिन में वापस आ जाएगा। लेकिन इसके बावजूद तत्कालीन एसडीओपी अभिषेक चौधरी ने एक टीम को सुरेश की तलाश की जिम्मेदारी सौंप दी।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा लेकिन सुरेश की कोई जानकारी नहीं मिली। इसी दौरान सुरेश के लापता होने के लगभग एक महीने बाद 29 अक्टूबर को एसडीओपी श्री चौधरी को थाना इलाके के गांव कायदी के सरपंच जितेन्द्र नगरगढ़े ने जोड़ापाट की पहाड़ी पर धान खरीदे केन्द्र के पास एक सड़ा गला शव पड़ा होने की खबर दी। मामला गंभीर था इसलिए एसडीओपी के निर्देश पर तत्कालीन वारासिवनी थाना प्रभारी शंकर सिंह चौहान दलबल और एफएसएल टीम के साथ मौके पर जा पहुंचे।

मौके पर पड़ा शव पूरी तरह से कंकाल में तब्दील हो चुका था। केवल उसके कपड़ों से अंदाजा लगाया जा सकता था कि शव किसी पुरुष का है। एफएसएल टीम ने मौके पर जांच कर बताया कि संभवतः मृतक की आयु 20-22 साल की हो सकती है। इसी दौरान शव के पास मिले कपड़ों से मिले एक पर्स से मृतक की पहचान सुरेश पिता गिंगाराम निवासी नागपुर के रुप में होने पर पुलिस ने गिंगाराम को बुलाकर शव के पास मिले कपड़ों और जूतों को उन्हें दिखाया जिससे उन्होंने शव की पहचान अपने बेटे सुरेश के रुप में कर दी।

शव को पीएम के लिए पहले बालाघाट और फिर जबलपुर मेडिकल कॉलेज भेजा गया। जिसकी प्रारंभिक रिपोर्ट में मामला हत्या के रुप में सामने आने पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू की जिसमें मृतक के मोबाइल नंबर की लोकेशन से जानकारी मिली कि 29 सितंबर के रोज मृतक का मोबाइल काफी देर तक बालाघाट में समाधान अस्पताल के सपास मौजूद रहा था। इस पर पुलिस ने समाधान अस्पताल के आसपास जानकारी जुटाई जिसमें पता चला कि घटना दिनांक को मृतक दो युवकों के साथ वहां देखा गया था। इस पर पुलिस ने मृतक के मोबाइल नंबर के साथ एक्टिव दूसरे नंबरों पर गौर किया तो दो ऐसे नंबर सामने आए जो न केवल काफी देर तक मृतक के नंबर के साथ मौजूद रहे थे बल्कि उनकी लोकेशन मृतक के मोबाइल के साथ ही जोड़ापाट की पहाड़ी की भी मिल रही थी जहां सुरेश का कंकाल मिला था।

पुलिस के लिए यह महत्वपूर्ण सुराग था इसलिए मोबाइल नंबर के आधार पर दोनों संदिग्ध की पहचान राजेश निवासी सावंगी और वीरेन्द भंडारवोड़ी थाना खैरलांजी के रुप में होने पर दोनों के ठिकानों पर छापामारी की जिसमें दोनों ही घर से लापता मिले। इतना ही नहीं उनके मोबाइल भी महीने भर पहले बंद हो चुके इससे पुलिस को पूरा भरोसा हो गया कि सुरेश की हत्या में राजेश और वीरेन्द का ही हाथ है। इसलिए पुलिस ने दोनों आरोपियों की तलाश में जगह-जगह छापामारी करने के लावा अपने मुखबिर तैनात कर दिए। जिसमें पुलिस को दोनों के हैदराबाद में होने की खबर लगने पर पुलिस की एक टीम ने हैदराबाद जाकर दोनों को दबोच लिया। वारासिवनी थाने में पूछताछ के दौरान दोनों पहले तो इस मामले में कुछ भी जानने से इंकार करते रहे लेकिन जब पुलिस ने उनके साथ सख्ती दिखाई तो उन्होंने सुरेश की हत्या की बात स्वीकार ली और वह ब्लेड भी जब्त करवा दी जिससे उन्होंने सुरेश की कलाई की नसें काटी थी। जिसके बाद पूरी कहानी इस प्रकार सामने आई।

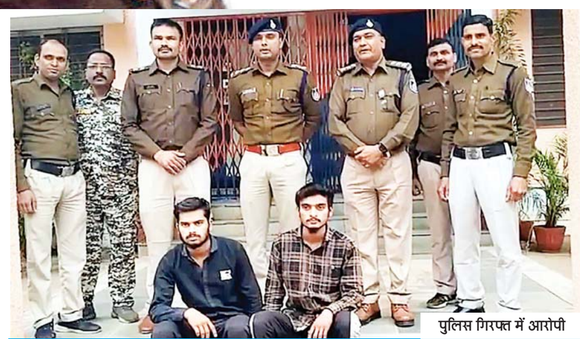
पुलिस गिरफ्त में आरोपी

प्रेमिका की बेरुखी से करता था शक

जिस मोहल्ले में सुरेश किराये से रहता था उसी मोहल्ले में रहने वाली सपना अपनी खूबसूरती के लिए पूरी वारासिवनी में पहचानी जाती थी। यूं तो सपना के सैकड़ों दीवाने थे जिनमें एक वीरेन्द भी था। वीरेन्द सपना के स्कूल आते-जाते उसका पीछा सालों से कर रहा था। इतना ही नहीं सपना तक पहुंच बनाने के लिए उसने सपना के भाई से दोस्ती कर उसके घर आना-जाना भी शुरू कर दिया था।

सपना जानती थी कि वीरेन्द ने उसके भाई से दोस्ती किस मकसद से की है इसलिए धीरे-धीरे वीरेन्द सपना के दिल में जगह बनाने लगा और कोई साल डेढ साल पहले उनकी प्रेम कहानी भी शुरू हो गई। जिससे सपना स्कूल बंक करके अपने प्रेमी के साथ एकांत जगहों पर जाकर प्यार के सपने बुनने लगी। इधर नागपुर से आईटीआई करने आया सुरेश अपने सीधे सरल स्वभाव के कारण मोहल्ले में अलग पहचान बना चुका था। इसी के चलते उसकी सपना के भाई से दोस्ती हो गई थी जिससे यदा-कदा उसका भी सपना के घर आना-जाना होने लगा था। अपितु सीधा सच्चा सुरेश कभी अपने दोस्त की जवान बहन की तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखता था लेकिन वीरेन्द को शक था कि वह उसकी प्रेमिका सपना पर डोरे डालने के लिए सपना के घर आता जाता है। संयोग से इसी दौरान सपना के भाई को वीरेन्द के साथ अपने बहन के चल रहे इश्क की जानकारी हो गई। इससे उसने अपनी बहन की खासी खबर ली और वीरेन्द से दूर रहने की हिदायत दी। भाई को इश्क के बारे में जानकारी हो गई है यह जानकर सपना डर गई। इससे उसने उसी रोज से वीरेन्द से दूरी बनाना शुरू कर दिया। यहां तक की वीरेन्द घर आता तो वह उसके सामने भी नहीं पड़ती और न ही उसके फोन रिसीव करती। इससे वीरेन्द को लगने लगा कि शायद उसकी प्रेमिका की बेरुखी को कारण सुरेश है। इससे वह सुरेश से रंजिश रखने लगा। धीरे-धीरे चार महीने का समय बीत गया लेकिन सपना की बेरुखी नहीं टूटी तो वीरेन्द ने सुरेश से बदला लेने की ठान कर अपने दोस्त राजेश राणा से बात की जिस पर राजेश से सीधे सुरेश को रास्ते से हटाने की सलाह दी। जिसके बाद दोनों दोस्त सुरेश की हत्या की फिराक में रहने लगे। इसके लिए वीरेन्द ने धीरे-धीरे सुरेश से दोस्ती बढ़ाई और घटना वाले दिन पहले तो उसे बालाघाट ले गया फिर वहां से राजेश को भी साथ लेकर दोनों उसे घूमने के बहाने से जोड़ापाट की पहाड़ी पर ले गए जहां एकांत में मौका पाकर उसकी गला दबा कर हत्या करने के अलावा ब्लेड से कलाई भी काट दी और शव को झाड़ियों में फेंककर घर वापस आने के बाद हैदराबाद भाग गए। जहां से महीने भर बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

वीरेन्द की प्रेमिका सपना के भाई को बहन के इश्क की जानकारी लग गई थी। इस पर भाई के डर से सपना ने वीरेन्द से दूरी बना ली थी। इससे वीरेन्द को शक था कि संभवतः सुरेश के कारण उसकी प्रेमिका उससे दूर चली गई है। इसी रंजिश के कारण वीरेन्द ने सुरेश की हत्या कर दी।

हत्या के बाद भाग गए थे हैदराबाद

सुरेश की हत्या करने के बाद दोनों आरोपी हैदराबाद भाग गए थे ताकि पुलिस उन पर शक न करे। लेकिन घटना दिनांक को दोनों के मोबाइल की लोकेशन मृतक के मोबाइल के साथ मिलने से पूरी कहानी सामने आ गई।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित
सभी नाम बदले हुए हैं।

कटनी | नाबालिग किशोरी ने दूसरी युवती के साथ अश्लील वीडियो देखकर कर दी मंगेतर की हत्या

नाबालिग मंगेतर का बदला

एक वक्त था जब कच्ची उम्र में किशोरियों को न तो प्यार मोहब्बत का मतलब मालूम होता था और शादी का अर्थ। लेकिन वक्त बदला तो सब कुछ इतनी तेजी से बदला कि अब किशोर उम्र की एक युवती ने अपने मंगेतर का दूसरी युवती के साथ अश्लील वीडियो देखकर बिना एक पल गंवाए मंगेतर की हत्या कर शव घर से बाहर फेंक दिया।

मृतक का शव ले जाते परिजन

वीडियो या सिर्फ फोटो

पुलिस का कहना है कि अपचारी किशोरी ने अपने मंगेतर के मोबाइल में उसकी किसी दूसरी युवती के संग फोटो देखकर गुस्से के कारण मंगेतर की हत्या की है। जबकि सूत्र बताते हैं कि किशोरी ने यह कदम अपने मंगेतर का दूसरी युवती के साथ अश्लील वीडियो देखकर उठाया है। आम चर्चा को माने तो वीडियो की बात ज्यादा सही मालूम देती है क्योंकि महज एक फोटो देखकर कोई लड़की इतना बड़ा कदम नहीं उठा सकती।

घटना की जांच करती पुलिस

क्या हत्या में कोई और भी शामिल है?

विजय की हत्या को लेकर एक सवाल और है जिसका जवाब किसी के पास नहीं। दरअसल अपचारी की माने तो उसने अकेले की विजय की गर्दन तार से कसकर उसकी हत्या की थी। एक 16 साल की किशोरी 20 साल के स्वस्थ्य युवक की गर्दन कैसे कस सकती है, यह बात जितनी अविश्वनीय है उतना ही इस बात पर भरोसा करना मुश्किल है कि हत्या के बाद घबड़ाई हालत में कोई नाबालिग लड़की कैसे अकेले एक शव को खींचकर इतनी दूर ले जा सकती है।

कटनी जिले में एक छोटा-सा गांव है जिसकी की आवोहवा आज महुआ के फूलों की महक और खेतों में गेहूं की सुनहरी बालियां की खनक ही नहीं, बल्कि एक ऐसी दर्दनाक घटना की गवाह भी है, जिसने पूरे इलाके को दहला दिया। यह कहानी है विजय नाम के युवक की। 20 साल का विजय अपनी होने वाली पत्नी से मिलने उसके गांव पहुंचा था। उसे क्या पता था कि प्यार की इस मुलाकात का अंजाम उसकी मौत होगी। विजय विजयराघवगढ़ थाना क्षेत्र के एक गांव का रहने वाला है। वैसे तो उसकी जिंदगी सादगी भरी थी लेकिन वह जिस खेत में मजदूरी करता था उस खेत के पड़ोस में जिस किसान का खेत था उसकी 22-25 साल की अविवाहित बेटी के साथ उसकी नजदीकी ही उसके जीवन की किताब का ऐसा पाठ था जिसे काला या उजला कुछ भी कहा जा सकता है।

एक रोज विजय के बापू ने अपने बेटे को उम्र में बड़ी और गांव के संपन्न किसान की लड़की के साथ खेत की मेड़ पर उगी झाड़ियों के पीछे निर्वस्त्र देख लिया। बापू ने दुनिया देखी थी इसलिए वे जानते थे कि जवान बेटे को रोकने-टोकने से नहीं बल्कि उसकी शादी कर देने से ही उसकी इस हरकत पर लगाम लगाई जा सकती है। इसलिए उन्होंने जिले में ही पास के एक गांव में रहने वाली 16-17 साल की एक किशोरी गुलाब (काल्पनिक नाम) से उसका रिश्ता पक्का कर दिया।

गुलाब गांव की रहने वाली अल्हड़ किशोरी थी। उसके पिता कच्ची उम्र में बेटी की शादी नहीं करना चाहते थे लेकिन विजय के पिता ने यह कहकर उन्हें मना लिया था कि शादी अभी कर लेते है फिर गौना दो-तीन साल बाद कर देना तब तक बिटिया भी सयानी हो जाएगी। अपितु यह बात उन्होंने झूठ कही थी उनका इरादा तो जल्द से जल्द बेटे की लिए पत्नी लाने का था क्योंकि वे जानते थे कि विजय को लड़की के संग की आदत पड़ चुकी है। इसलिए बहू घर नहीं आई तो गांव में किसी दिन बबाल हो जाएगा।

विजय और गुलाब की शादी तय हुई थी। दोनों परिवारों के बीच सब कुछ पक्का था। रस्मों की तारीखें नजदीक आ रही थीं। ऐसे में होने वाले दूल्हे-दुल्हन का एक-दूसरे से मिलना, बातें करना कोई बड़ी बात नहीं थी। विजय तो वैसे भी 16 साल की नवयौवना के साथ सुहागरात के सपने देखने लगा था। अपितु गांव में उसकी प्रेमिका विजय की शादी की बात से नाराज थी लेकिन विजय ने उससे वादा करके रखा था कि रात भले ही पत्नी की हो लेकिन दिन हमेशा तुम्हारा रहेगा।

विजय और गुलाब के बीच फोन पर बातें होने लगी थी। जिसके चलते जब विजय उससे सुहागरात की बात छेड़ता तो गुलाब शर्माकर फोन काट देती। लेकिन विजय शादी तक इंतजार करने के मूड में नहीं था इसलिए अपनी होने वाली पत्नी को मनाकर उसने गुलाब को अश्लील वीडियो भेजना शुरू कर दिया था।

किशोर उम्र की गुलाब ने जब यह सब देखा तो उसके खून में उबाल आने लगा। जिसके चलते इसका फायदा उठाकर विजय ने उससे अकेले में मिलने का दबाव बनाना शुरू कर दिया। लेकिन घर वालों के डर के कारण गुलाब उससे अकेले में मिलने की बात टालती रही। दरअसल गुलाब जानती थी कि अगर वो विजय से अकेले में मिली तो विजय शादी से पहले की उसके साथ वह सब कुछ कर डालेगा जिसके बारे में वह अक्सर बात करता रहता है।

लेकिन विजय भी हार मानने वाला नहीं था। वह गुलाब से लगातार मिलने के लिए कहता रहा जिससे गुलाब मजबूरी में उससे मिलने राजी हो गई लेकिन उसने शर्त रखी की इसके लिए उसे गुलाब के घर आना पड़ेगा। रही अकेले में मिलने की बात तो गुलाब का कहना था कि देख लेंगे अगर मौका मिला तो वह कुछ देर के लिए उससे मिल सकती है।

विजय ने जब देखा कि कोई और रास्ता नहीं है तो वह शादी से पहले ससुराल आने तैयार हो गया। इसके लिए उसने वेलेंटाइन वीक में पहली मुलाकात की योजना बनाई और 11 फरवरी को मन में हजारों सपने लिए गुलाब के गांव जा पहुंचा। विजय ने रात के अंधेरे में मौका निकालकर गुलाब के संग मस्ती करने की योजना बना रखी थी लेकिन उसे क्या मालूम था कि यह उसकी जिंदगी की आखिरी मस्ती और आखिरी रात है।

सूरज ढल चुका था और गांव में चौपाल पर लोग इकट्ठा होने लगे थे। विजय अपनी साइकिल लेकर गुलाब के घर पहुंचा। गुलाब ने उसे देखा तो शर्माई मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। उसके घर वाले भी आने वाले दामाद को देखकर खुश हुए।

शेष पृष्ठ 7 पर...

सत्यकथा

पेज 1 से जारी

प्रेमी से प्रताड़ित होकर लौटी तो खुली पति की हत्या का राज

पीठ पीछे

प्रेमिका के वापस शहर में आने के बाद शोएब और रजनी की पुरानी प्रेम कहानी फिर शुरू हो गई। लेकिन पति के साथ रहने से शोएब और रजनी को पहले जैसी आजादी नहीं थी इसलिए मौका मिलने पर शादीशुदा रजनी ने पति के साथ-साथ प्रेमी के संग भी दोहरी जिंदगी जीना शुरू कर दिया था।

प्रिंस वाल्मीकि, मृतक

शोएब खान तेईस साल का युवक। गांधी वार्ड, देवरी का रहने वाला। रजनी का पूर्व प्रेमी। वह आदमी, जिसने रजनी के साथ रील बनाई, सपने सजाए, लेकिन शादी नहीं कर पाया। जब रजनी ने प्रिंस से शादी कर ली, तो शोएब टूट गया। टूटना उसने खुद को बर्बाद करने में दिखाया। स्मैक की लत। आवारगी। और अंदर ही अंदर सुलगती बदले की आग।

साल 2022 की बात है। इंस्टाग्राम पर एक रील वायरल हो रही थी। किसी नए गाने पर लड़की हाथ हिला रही थी जिसका नाम था रजनी इस कहानी की नायिका। इस नायिका के पीछे रील में एक युवक मुस्कुरा रहा था यह शोएब था इस कहानी का खलनायक।

उस वक्त शोएब और रजनी एक-दूसरे के करीब थे। दोनों में नजदीकी ऐसी की कोई दूरी ही शेष न रह पाई थी। लेकिन इनकी शादी को लेकर शोएब के घरवाले राजी नहीं थे। वह बेरोजगार था। उसकी पहचान सिर्फ एक 'गली के लड़के' की थी।

इसी बीच कहानी में प्रिंस आया। प्रिंस ने रजनी को देखा। पसंद किया। बात की। प्रिंस में वह सब कुछ था जो शोएब के पास नहीं था - नौकरी, स्थिरता, एक सामान्य परिवार। इसलिए रजनी ने शोएब को छोड़ा और प्रिंस से शादी कर ली। मगर शादी के बाद रजनी पति को लेकर देवरी आ गई। उसी देवरी में जहां रजनी का पहला प्यार शोयब रहता था।

शादी के बाद इन दोनों की पहली मुलाकात बाजार में हुई। दोनों ने एक-दूसरे को देखा। किसी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उस खामोशी में हजारों वादे थे, जो अब तोड़े जा चुके थे। फिर बातें शुरू हुईं। पहले सिर्फ 'हाय-हैलो', फिर देर तक कॉल्स। फिर गली के किसी कोने में मिलना। प्रिंस को भनक नहीं लगी। उसे भरोसा था उसकी पत्नी पर। वह सुबह काम पर जाता, शाम लौटता। रजनी दिन भर अकेली रहती।

शोएब को स्मैक की लत थी। देवरी के पिछड़े इलाकों में ड्रग्स आसानी से मिल जाते हैं। शोएब पैसे उधार लेता, चोरी-छिपे बेचता, और खुद भी लेता। इसी बीच उसने एक प्लान बनाया, प्रिंस से दोस्ती करने का। उसका सोचना था कि अगर प्रिंस उसका दोस्त बन जाए, तो रजनी से मिलना आसान हो जाएगा। शोएब ने चालाकी दिखाई। वह धीरे-धीरे प्रिंस के करीब आया। फिर एक दिन शोएब उसे शराब की दुकान ले गया। दोनों ने साथ में पी। बातें हुईं। प्रिंस ने बताया अपने सपने - कुछ बड़ा करना है, घर लेना है, बच्चे पैदा करने हैं।

शोएब सुनता रहा। उसके चेहरे पर मुस्कान थी, लेकिन आंखों में आग।

फिर शोएब ने उसे ड्रग्स देना शुरू किया। पहले मना किया, फिर आदत पड़ गई। प्रिंस को एहसास नहीं हुआ कि वह एक ऐसे जाल में फंस रहा है, जहां से वापसी नहीं।

20 अगस्त, 2025 की शाम 7 प्रिंस घर से निकलकर सीधे सनसाइन स्कूल के मैदान में जा पहुंचा जहां शोयब पहले से उसका इंतजार कर रहा था। शोयब के साथ प्रिंस ने पहले शराब पी फिर ड्रग्स लिए जिससे उसे जल्द ही गहरी नींद आने लगी।

शोएब ने मौका देखकर पास में पड़ा भारी पत्थर उठाकर प्रिंस के सिर पर दे मारा। जिससे उसका सिर तरबूज की तरह फट गया।

शोएब ने एक पल देखा। फिर जल्दी से चारों ओर देखा। कोई नहीं था। उसने प्रिंस के हाथ से अंगूठी निकाली। मेहंदी कलर की प्लास्टिक वाली अंगूठी। फिर उसे झुन्नू नदी में फेंक दिया। लाश को उठाना मुश्किल था। वह पसीने-खून से लथपथ था, फिर भी उसने शव को घसीटा। तीस मीटर दूर। एक पुराना, टूटा-फूटा सेप्टिक टैंक। कभी इस्तेमाल होता था, अब बेकार पड़ा था। शोएब ने शव को टैंक में फेंकने के बाद ऊपर से कचरा डाला। सड़े-गले फल, पॉलिथीन, टूटे बर्तन। और उसके ऊपर नमक ताकि शव जल्दी गले। रात भर शोयब टैंक के पास बैठा रहा फिर सुबह उठकर घर वापस आ गया।

कोई शक न करे इसलिए सुबह होते की प्रिंस से मिलने उसके घर जा पहुंचा जहां उसकी मुलाकात अपनी प्रेमिका से हुई। रजनी पति के लापता हो जाने से दुखी थी लेकिन प्रेमी को देख कुछ समय के लिए वह पति का दर्द भूल गई। उसने मुस्कराते हुए शोयब को घर के अंदर आने को कहा। शोयब जानता था कि रजनी उसे किस लिए अंदर बुला रही है। उसका मन तो हुआ कि प्रेमिका की इच्छा को न टाले लेकिन मामला कुछ और ही था इसलिए उसे कोई प्रिंस के घर पर न देख ले इसलिए कुछ देर में आने का कहकर वह वहां से चला गया।

इसके बाद वह अक्सर स्कूल मैदान के पास से गुजरता। देखता कि कहीं कोई शक तो नहीं कर रहा। अपितु अब तक रहवासियों को दुर्गंध आने लगी थी, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

धीरे-धीरे दुर्गंध कम हुई। शव गल रहा था। सात दिन बाद शोएब ने हड्डियां निकालीं। उन्हें पॉलिथीन में बांधा और नाले में फेंक दिया।अब सिर्फ कंकाल बचा था, जो सेप्टिक टैंक में दबा रहा।

सेप्टिक टैंक से कंकाल निकालती पुलिस

इधर दो दिन बाद जब रजनी ने पति की गुमशुदगी दर्ज करवाई तब पुलिस पूछताछ में प्रिंस के परिवार वालों ने बताया कि रजनी का किसी और से अफेयर है। उसी ने प्रिंस को रास्ते से हटाया होगा। पुलिस ने रजनी से पूछताछ की लेकिन उसने बताया कि उसे प्रिंस के बारे में इतना ही पता है कि वह उस रोज शाम को थोड़ी देर में वापस आने का कहकर गया था। पुलिस ने सच्चाई जानने के लिए रजनी का फोन सर्विलांस पर लगाया तो मालूम चला कि रजनी और शोयब के बीच रोज रातों में कई घंटे लंबी बाते हो रही थी। दोनों के बीच रोज रात में बात हो रही थी इसलिए पुलिस को रजनी और शोयब पर शक गहरा गया।

प्रिंस की हत्या के बीस दिन बीत चुके थे। शोयब अब धीरे-धीरे रजनी के चारों तरफ अपना जाल बुनने लगा था। वैसे भी शादी के बाद तब शोयब ने रजनी से दोस्ती बना ली थी तब से अब तक वह कई बार रजनी से उसके ही घर में अकेले में मिलकर संबंध बना चुका था। रजनी को भी पति से ज्यादा शोयब के प्यार में गर्मी महसूस होती थी। इसी बात का फायदा उठाकर एक रात शोयब ने रजनी के सामने प्रस्ताव रखा कि दोनों भागकर गुजरात चलते हैं। वहां रोकने-टोकने वाला कोई नहीं होगा इसलिए दोनों मस्ती से दिन रात प्यार करेंगे।

ऐसा कैसे हो सकता है। प्रिंस वापस आया तो ..., रजनी ने शंका जाहिर की।

शोएब ने कहा, वह तो तुझे छोड़कर जा चुका है। मुझे तो लगता है कि उसका किसी लड़की के साथ चक्कर होगा जिससे वह उसी के साथ जाकर रहने लगा होगा। इसलिए अच्छा है कि प्रिंस से बदला लेने तुम मेरे साथ चलो। रजनी, शोयब की बातों में आ गई और वह उसके साथ एक रात चुपचाप अहमदाबाद चली गई।

अहमदाबाद में कुछ हफ्ते दोनों के हनीमून की तरह बीते। शोयब दिन-रात रजनी को लेकर बिस्तर पर पड़ा रहता और भविष्य के बड़े-बड़े सपने दिखाता। लेकिन इस हनीमून का असर यह हुआ के 8 दिन बीतते बीतते शोयब अपनी असलियत पर आ गया। वह रजनी के साथ कई तरह से अप्राकृतिक संबंध बनाने लगा। रजनी मना करती तो उसके साथ मारपीट करने लगा। वह पढ़ा-लिखा भी ज्यादा नहीं था इसलिए उसे काम भी मिला तो ऐसा जिसमें मुश्किल से ही दोनों को खर्च पूरा होता था। ऊपर से शोयब की शराब और ड्रग्स की आदत के चलते रजनी को जल्द ही लगने लगा कि शोयब के साथ आकर उसने गलती की है।

> **पति के लापता हो जाने के बाद उसकी हत्या कर दिए जाने की बात से बेखबर रजनी प्रेमी की बातों में आकर उसके साथ भागकर गुजरात चली गई थी। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि वह जिस व्यक्ति पर भरोसा कर रही है वही उसके सुहाग का कातिल है।**

इसलिए वह शोयब की गंदी हरकतों को पूरा करने से मना करने लगी। नतीजन एक रात शोयब ने जब शराब के नशे में रजनी के साथ अप्राकृतिक संबंध बनाने की कोशिश की तो रजनी फट पड़ी उसने साफ कह दिया कि ऐसे कामों में वह उसका साथ नहीं दे सकती। साथ में भागकर आई लड़की ने आंख दिखाई तो शोयब ने उसकी बुरी तरह से पिटाई कर दी। जिसके चलते बात इतनी बढ़ी कि रजनी ने शोयब के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज करवा दी और अगले की दिन देवरी वापस आ गई।

रजनी के देवरी वापस आने से पहले तक सब यही सोच रहे थे कि शायद पति के गुम हो जाने के दुख में रजनी भी कहीं चली गई है। अपितु प्रिंस के बाद रजनी के भी गायब हो जाने से दबे स्वर में शोयब के साथ रजनी के अवैध रिश्तों की चर्चा होने लगी थी। लेकिन खुलकर कोई नहीं बोल रहा था। अहमदाबाद से वापस आने के बाद रजनी ने भी चुप्पी साध रखी थी। इतने दिनों तक वह कहां रही इसके बारे में उसने पूछने पर भी किसी को कुछ नहीं बताया।

लेकिन दूसरी तरफ रजनी के चले जाने से शोयब पागल हो गया। दरअसल वह रजनी को अपनी वासना का खिलौना बनाकर यूज कर रहा था। उसका मानना था कि रजनी के साथ उसने कोई निकाह तो किया नहीं है इसलिए जब तक कोई दूसरी नहीं मिलती तब तक रजनी को ही वह रातों को सहारा बनाकर रखेगा।

बरामद कंकाल के अवशेष

रजनी के जाने के बाद उसने बाजारू लड़कियों के पास जाने की कोशिश की लेकिन इसमें कई दिक्कत थी। पहला डर तो गुजरात पुलिस का था जो काफी सख्त मानी जाती है। दूसरे लड़कियां दाम ज्यादा मांगती थी। इतना ही नहीं एक बार तो उसने पूरा दाम चुकाने के बाद जब लड़की के साथ अप्राकृतिक संबंध बनाने की कोशिश की तो उसने शोयब को लात मारकर बिना कपड़ों के ही कमरे बाहर निकाल दिया।

पैसा दो, मन भी न भरे और लातें भी खाना पड़े ऐसा सौदा शोयब को मंहगा लगा इसलिए वह रजनी को वापस हासिल करने की कोशिश करने लगा। उसने रजनी को फोनकर वापस बुलाने के लिए तरह-तरह के वादे किए। परेशान न करने की कसमें खाई लेकिन रजनी नहीं मानी तो उसने शातिर योजना बनाकर प्रिंस के भाई के मोबाइल पर मैसेज भेज कर उसे बता दिया कि तुम्हारे भाई की हत्या हो चुकी है। इतना नहीं उसने यह भी बता दिया कि शादी से पहले, शादी के बाद और प्रिंस के चले जाने के बाद से उसकी भाभी रजनी के साथ मेरे जिस्मानी रिश्ते रहे हैं। मैसेज में उसने यह भी साफ कर दिया कि रजनी, प्रिंस की तलाश में नहीं गई थी बल्कि वह मेरे साथ अहमदाबाद में ऐश कर रही थी। अपनी बात को सही साबित करने के लिए शोयब ने प्रिंस के भाई को रजनी के साथ अपने कई अश्लील फोटो भी भेज दिए जिनमें साफ था कि रजनी अपनी मर्जी से ही शोयब की बाहों में है। शोयब की मैसेज मिलते ही प्रिंस के परिवार के पैरों तले से जमीन खिसक गई। पूरा परिवार तुरंत थाने पहुंचा और पुलिस को शोयब द्वारा भेजा मैसेज बता दिया। यह शोयब और रजनी के खिलाफ पक्का सबूत था। दरअसल शोयब का सोचना था कि इस मैसेज के बाद पकड़े जाने के भय से रजनी उसके पास भागकर वापस आ जाएगी।

लेकिन मैसेज पाकर प्रिंस के परिवार के साथ रजनी भी सन्न रह गई क्योंकि उसे पति की हत्या के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। अब पुलिस के लिए शोयब को पकड़ना जरूरी था इसलिए देवरी पुलिस ने सर्विलांस टीम बनाकर उसके मोबाइल की लोकेशन ट्रेस की जो मध्यप्रदेश में ही नरसिंहपुर जिले में करेली की मिली। करेली में शोयब एक ट्रैक्टर एक्सीडेंट में वह घायल हो जाने के कारण अस्पताल में भर्ती था। उसे पुलिस कार्रवाई की भनक लगी तो वह अस्पताल से फरार होकर करेली के पास एक गांव में रिश्तेदार के घर छिपा। लेकिन पुलिस से बचना आसान नहीं था। जिसके चलते पुलिस ने घेराबंदी कर 9 फरवरी 2026 की रात उसे गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में पहले उसने झूठ बोला उसका कहना था कि प्रिंस की पत्नी ने बुलाया था, मैं तो वहां पहुंचा तो उसकी लाश पड़ी थी। पुलिस ने शोयब के साथ सख्ती की तो वह टूट गया। उसने सब कबूल किया। हत्या कैसे की, शव कहां छिपाया, अंगूठी कहां फेंकी। जिसके बाद उसकी निशानदेही पर पुलिस सनशाइन स्कूल के मैदान में पहुंची जहां सेप्टिक टैंक की खुदाई में खोपड़ी कुछ हड्डियां और नर कंकाल के अवशेष मिले। कपड़े, जूते और चैन से प्रिंस के परिवार ने उसकी पहचान की। जिसके बाद डीएनए जांच के लिए सैंपल भेजे गए। शोएब खान पर हत्या और उसके सबूत नष्ट करने के आरोप में मामला दर्ज कर अदालत में पेश किया गया जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

डर के कारण राजी नहीं थे शोयब के परिजन

शोयब की माने तो उसके और रजनी के संबंध सालों पुराने थे। रजनी उसके साथ भाग कर निकाह करने राजी थी लेकिन आजकल लव जेहाद को लेकर हिंदू समाज में जो गुस्सा है उसके चलते शोयब के परिवार वाले इसके लिए राजी नहीं थे। उनका मानना था कि शोयब अगर ऐसा करता है तो उनका देवरी में रहना मुश्किल हो जाएगा।

पत्नी की भूमिका जांच के घेरे में

इस मामले में टीआई का कहना है कि प्रारंभिक तौर पर मृतक की पत्नी की हत्या में कोई भूमिका सामने नहीं आई है। लेकिन पूरे घटनाक्रम को देखते हुए उसकी भूमिका की बारीकी से जांच की जा रही है। अगर सबूत मिलते हैं तो पत्नी को भी आरोपी बनाया जा सकता है।

पति से दोस्ती बनाकर जिंदा किया पुराना रिश्ता

मृतक प्रिंस सागर का रहने वाला था। लेकिन संयोग से प्रिंस शादी के कुछ ही समय बाद पत्नी को लेकर देवरी आकर रहने लगा था। देवरी में ही पत्नी के बचपन का प्रेमी शोएब रहता था इसलिए शादी के बाद जब रजनी देवरी आई तो एक बार फिर उनके मन में पुराना प्यार जाग उठा। रजनी से मुलाकात आसान बनाने के लिए शोएब ने प्रिंस से दोस्ती कर उसे शराब और ड्रग्स की लत लगा दी थी। जिससे शोएब आए दिन प्रिंस को शराब पिलाकर लगभग बेहोश करने के बाद अपनी प्रेमिका के संग अय्याशी करता था।

बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी

प्रिंस को नशे में बेहोश करने के बाद भी शोएब को रजनी के संग संबंध बनाते हुए इस बात का डर रहता था कि कहीं प्रिंस का नशा न टूट जाए। ऐसा हुआ तो कभी नहीं लेकिन फिर भी शोएब जानता था कि बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी। एक न एक दिन तो प्रिंस का नशा टूटेगा और वह रंगे हाथ पकड़ा जाएगा। इसलिए प्रिंस का डर हमेशा के लिए खत्म करने की सोच लेकर उसके प्रिंस की हत्या कर शव हो सेप्टिक टैंक में फेंक दिया था।

सब एक ही थैली के .....

कहानी का एक दूसरा पहलू यह भी है कि मृतक प्रिंस के अलावा उसकी हत्या का आरोपी शोएब दोनों की आपराधिक प्रवृति के रहे है। देवरी में शोएब के खिलाफ तो सागर के विभिन्न थानों में मृतक प्रिंस के खिलाफ चोरी-चकारी और मारपीट के मामले दर्ज हैं। इतना ही नहीं मृतक की पत्नी रजनी के खिलाफ भी कुछ आपराधिक मामले पहले से ही दर्ज होने की बात चर्चा में है।